International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 3, March 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

थिरूमल आचार्य की पाश्चात्य जगत में गतिविधियाँ

डॉ विक्रम सिँह[1],

सहप्राध्यापक, अध्यक्ष इतिहास विभाग

वैश्यकॉलेजभिवानी

किरण बाला[2],

शोधविध्यार्थि,सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बडी झुनझुनू,राजस्थान

इस शोध पत्र में थिरूमल आचार्य की पाश्चात्य जगत में की गई क्रांतिकारी गतिविधियों की शुरूआत, अन्य क्रांतिकारियों से संबंध, संगठन स्थापित करना, समाचार–पत्र, पत्रिकाओं के प्रकाशन में अपना सहयोग देना, विश्व जनमत को आकर्षित करना एवं अन्य संबंधित तथ्यों का विस्तार से वर्णन किया गया है।थिरूमल आचार्य सम्भवतः फ्राँस में रह रहे भारतीय क्रांतिकारियों के साथ काम करने का इच्छुक था लेकिन उसके भाग्य ने लंदन में भिजवा दिया जहाँ पर वह वी॰वी॰ अय्यर से मिला। आचार्य को अय्यर ने विश्वास दिलाया कि यहाँ उसे किसी प्रकार की न खाने और न ही रहने की कोई समस्या होगी। लंदन से उसके जीवन का नया अध्याय शुरू हुआ और उसने भारतीय क्रांतिकारियों के साथ कार्य करना आरम्भ कर दिया।1जब भारतीय क्रांतिकारी इंग्लैंड एवं अन्य पाश्चात्य देशों के क्रांतिकारियों के साथ मिलकर राष्ट्रीय संघर्ष को प्रारंभ करने में लगे हुए थे तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं ने भी अपने संगठन एवं संचार के माध्यमों से इंग्लैंड में आंदोलन प्रारम्भ कर चुके थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना मूलतः 1885 में हो चुकी थी ओर इस संगठन के नेताओं ने प्रारंभ से ही इस महत्व को समझा। लंदन में अपनी कमेटी का गठन किया जिसे ब्रिटिश कमेटी ऑफ इंडियन नैशनल कांग्रेस कहा जाता है की स्थापना 1888 में की।2 लंदन में बने इस संगठन का मुख्य लक्ष्य था कि अपनी सभी समस्याओं के निराकरण के लिए ब्रिटिश जनता और संसद से सीधे सम्पर्क एवं संवाद बनाया जाए। इसी कड़ी के अन्तर्गत कई बार कांग्रेस ने अपने प्रतिनिधियों के द्वारा जनमत को जगाने का कार्य शुरू किया। चुनावों के समय को विशेष रूप से चुना गया ताकि प्रतिनिधियों द्वारा भारतीय पक्ष को ब्रिटिश जनता के सामने रखा जाए जिसकी अनदेखी न हो सके। विभिन्न चुनाव क्षेत्रों में अपने भाषणों के द्वारा

समस्याओं को संचार माध्यमों के सामने भी रखा गया। जन–प्रतिनिधियों के साथ जनता से रूबरू होकर भारतीय विषयों की बात करते थे।3

संगठन के बाद संचार का दूसरा माध्यम समाचार–पत्र एवं पत्रिकायें थी जिनके द्वारा सभी मुद्दों एवं समस्याओं को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता था। देश के सभी बड़े नेताओं ने यहाँ से पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन को जरूरी समझा। सभी का मत था कि एक प्रभावशाली पत्र का प्रकाशन जल्दी से प्रारंभ किया जाए। स्थिति को देखते हुए 'इण्डिया' नामक पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया।4इस ब्रिटिश कमेटी का तीसरा कार्य था कि ब्रिटिश सांसदों के सहयोग से ब्रिटिश संसद में एक मंच का गठन करके भारतीय मुद्दों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने के लिए संसद का ध्यान आकर्षित करना था। इंग्लैंड के उदारवादी दल के साथ ताल–मेल बनाकर उसका हरसंभव सहयोग प्राप्त करना था क्योंकि इस दल की भावनायें भारतीयों के पक्ष में थी। उदारवादी दल ने एक भारतीय दादाभाई नारौजी को एक ब्रिटिश संसदीय क्षेत्र सैन्ट्रल फिन्सबरी–से 1892 में उनको अपना प्रतिनिधि चुना और अंततः जीत कर प्रथम बार एक भारतीय ब्रिटिश संसद का सदस्य चुना गया।6

एक अन्य भारतीय शुभचिंतक सर विलियम वैडरबर्न ने भी चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। इन दोनों के सदन में जाने से अनेक सांसदों का सहयोग प्राप्त हुआ जिससे ब्रिटिश संसद में इण्डियन पार्लियामैन्ट्री कमेटी का गठन संभव हुआ। इस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में वैडरबर्न को ही चुना गया जो 1893 से 1900 तक इस भारतीय कमेटी का अध्यक्ष रहा। जो भी इस तरह के संस्थागत परिवर्तन ब्रिटिश की राजनीति में हुए उनका श्रेय ह्यूम, नारौजी, वैडरबर्न आदि को ही जाता है।7

किसी भी तरह के आन्दोलन और परिवर्तन के लिए तीन महत्वपूर्ण अंगों का होना अति आवश्यक माना जाता था। प्लेटफार्म, प्रेस और पर्लियामेंट जहाँ से संवैधानिक हितों की रक्षा सम्भव थी। कांग्रेस के द्वारा अपनाये गए ये सभी तौर–तरीके काफी महत्वपूर्ण थे लेकिन उम्मीद के मुताबिक सफलता प्राप्त नहीं हुई क्योंकि साम्राज्यवादी भावना का विश्व में सबसे बड़ा पोषक ब्रिटेन ही था। यह बड़ी ही विचित्र बात थी कि जब कभी साम्राज्यवाद की बात सामने आती थी तो दलों की गतिविधियों और नीतियों में भी कोई ज्यादा भेदभाव नहीं दिखाई देता था। भारतीय क्रांतिकारी इस बात को मानते थे कि ब्रिटिश सरकार से किसी भी तरह की आशा रखना ठीक नहीं था।8

ऐसी घटित परिस्थितियों ने भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन को जन्म दिया। यह वास्तव में आश्चर्यजनक परिवर्तन था जिसका श्रेय भारत में ब्रिटिश शासन को जाता है।9विश्व के समाजवादियों जैसे–एच0 एम0 हैण्डमैन ने भारतीय हितों की बात की। कांग्रेसी नेताओं के व्यवहार और तौर–तरीकों की कड़ी आलोचना की।10 उनका मानना था कि इन सब तरह के तौर–तरीकों से कुछ प्राप्त नहीं होने वाला था और न ही समय की मांग थी। कठोर कदम उठाने की अत्यंत आवश्यकता थी। उन्होंने भारतीय क्रांतिकारियों को सुझाव दिया और अन्ततः इण्डियन होम रूल

सोसायटी की स्थापना भारतीय क्रांतिकारियों ने लंदन में की। इस सोसायटी के मुख्य ध्येय थे :– 1. भारत के लिए स्वराज्य प्राप्त करना; 2. संचार माध्यमों के द्वारा कार्यक्रमों को वास्तविक रूप में संचालित करना ताकि असली ध्येय प्राप्त किये जा सकें; 3. भारत के लोगों में राष्ट्रीय एकता की स्थापना और स्वतंत्रता से होने वालो फायदों को प्रचारित–प्रसारित करना था। लंदन में रह रहे सभी भारतीय क्रान्तिकारियों ने श्यामजी कृष्ण वर्मा को इस संगठन की गतिविधियों में हर तरह की सहायता और सहयोग देने का दृढ़ निश्चय किया ताकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद का अंत किया जा सके।12

कांग्रेस की तरह उन्होंने भी अपनी गतिविधियों का केंद्र लंदन बनाया जो काफी उपयुक्त स्थान माना गया।13 इस समाचार पत्र के प्रत्येक अंक में क्रांतिकारी लेख, भाषण, भारतीयता और स्वराज्य की प्राप्ति पर दमदार आवाज उठाई। समाचार पत्र के प्रथम अंक में ही श्यामजी कृष्णवर्मा ने हर्बर्ट स्पेंसर की स्वतंत्रता भावना को उद्धृत करते हुए लिखाः ''सभी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार स्वतंत्र हैं वे दूसरों की समानता, स्वतंत्रता के रास्ते में न आये तो ....आक्रामकता और शोषण का विरोध करना न्यायोचित ही नहीं अपितु कर्त्तव्यपरायणता होगा।''14

प्रथम अंक में इस तरह के जोशिले लेखों, भाषणों को प्रकाशित करना वास्तव में प्रेरणादायक थे। समय की पुकार थी कि क्रांतिकारी संगठनों से ही जन–मानस, अत्याचारी और साम्राज्यवादी ताकतों से अपने आपको बचाया जा सकता था।15 भारतीय क्रांतिकारी कांग्रेसी नेताओं के उदारवादी रवैये के कड़े आलोचक थे। उग्र–राष्ट्रवादियों से उनकी विचारधारा काफी मिलती थी। वैसे भी सूरत फूट से तो कांग्रेस और भी कमजोर होने लगी।15 अनेक देशों के क्रांतिकारियों से लंदन में उनके संबंध अच्छे बन गये क्योंकि सभी की समस्याएँ एक समान थीं। विश्व के देश साम्राज्यवादी, निरंकुशवादी और शोषणकारी शक्तियों से निजात पाना चाहते थे क्योंकि विश्व में दरिद्रता और असमानता जैसी कुरीतियों को इन्हीं व्यवस्थाओं ने आगे बढ़ाया। उनका दृढ़ विश्वास था कि ऐसी शक्तियों को परास्त करके ही मानव कल्याण की विश्व में स्थापना संभव होगी।16

इंग्लैण्ड में भारतीय क्रांतिकारियों ने युवकों को अपने साथ जोड़कर एक नई नीति अपनाई जिसके अन्तर्गत उनको मानसिक तौर से प्रशिक्षण करने के लिए कुछ छात्रवृत्तियाँ प्रारंभ की । इन छात्रवृतियों के अंतर्गत भारतीय युवकों को ब्रिटेन में प्रशिक्षित करके छात्रवृतियों के समापन होने पर ऐसे युवकों को कोई भी नौकरी, पद या लालच ब्रिटिश सरकार से नहीं लेना होगा बल्कि देश में वापिस जाकर उन्हें राष्ट्रवादी गतिविधियों में संलिप्त होना होगा।17 लंदन में इंडिया हाउस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य भी यही था जिसे 65 क्रामवैल एवैन्यू, हाईगेट, लन्दन, में स्थापित किया गया। उनके लिए खाने–पीने और रहने की व्यवस्था सस्ती दरों पर की गई थी। यहीं पर लन्दन में सभाओं के आयोजन का स्थान भी स्थापित किया गया ताकि विभिन्न विषयों पर विद्वान लोगों के भाषण आदि कराने के कार्यक्रम जारी रहे।18

लन्दन में इण्डिया हाउस में ऐसी गतिविधियों की शुरुआत हो चुकी थी। इण्डिया हाउस में एक सौहार्दपूर्ण वातावरण बनने के कारण इण्डियन होमरूल सोसायटी ने छः उपदेशकों (व्याख्याता–पद) के पदों का विज्ञापन दिया। लेखक, पत्रकार एवं अन्य शिक्षित भारतीय यूरोप, अमेरिका आदि देशों में आकर स्थिति का अध्ययन कर और पाश्चात्य देशों के वातावरण को भलीभांति समझ सकें। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भारतीय पाश्चात्य देशों में आकर स्वतंत्रता, समानता और राष्ट्रीय एकता जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों को समझ सकें।19

ये भारतीय पूरी तरह से प्रशिक्षण लेकर भारत में वापिस आकर देश में देशभक्ति की भावना को आगे तेजी से बढ़ावा देना था। ब्रिटिश की गुप्तचर रिपोर्टों के अनुसार इंडिया हाउस थोड़े ही समय में 'भारत के बाहर बहुत खतरनाक संगठन,20 बन गया था। क्रांतिकारी गतिविधियों को नई पद्धति के द्वारा संचालित करना ही उनका मुख्य ध्येय था। यह एक नया प्रयोग था। लंदन में वैसे तो अनेक क्रांतिकारी थे लेकिन तीन महत्वपूर्ण भारतीय क्रांतिकारी थे जिनका संगठन और प्रेस के द्वारा भारतीय युवकों का ध्यान आकर्षित करने में महत्वपूर्ण इनका योगदान रहा। श्यामजी कृष्णवर्मा, सरदारसिंहजी रेवाभाई राणा, मैडम भिखाईजी रूस्तम कामा प्रमुख थे जिन्होंने लंदन में सभी तरह की गतिविधियों को तार्किक तरीके से संचालित किया।21

एक सभा में ब्रिटेन के प्रमुख समाजवादी हैण्डमैन ने इंडिया हाउस के उद्घाटन समारोह में जोरदार भाषण दिया। उनका दृढ़ विश्वास था कि ''ग्रेट ब्रिटेन के प्रति देशभक्ति की भावना को दर्शाने का ध्येय है कि भारत को धोखा देना... इंग्लैण्ड की तरह से भारतीयों को कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिए....यहाँ के लोग अनुदारवादी हैं, कट्टर हैं जो भारत की स्वतंत्रता के लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं हैं। भारतीयों को अपनी स्वतंत्रता अपने आप ही प्राप्त करनी है, उन्हें दूसरों पर आश्रित नहीं होना चाहिए।''22 सभी भारतीय क्रांतिकारी इस मत से सहमत थे कि किसी तरह भारत में राष्ट्रीय एकता की भावना व्यापक स्तर पर जागृत की जानी चाहिए ताकि स्वतंत्रता प्राप्ति का ध्येय बलवती हो सके। उनका मानना था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता अलग तरह की विचारधारा के समर्थक थे वे अपने तुच्छ स्वार्थों से ऊपर नहीं उठना चाहते और न ही उनमें देश के लिए बलिदान देने की भावना थी।23 निजी स्वार्थ से देश का लाभ नहीं होने वाला था उससे उपर उठने की अति आवश्यकता थी। इस तरह की विचारधारा की एक झलक सरदार सिंह रेवाभाई राणा के पत्र से दिखाई देती है। इंग्लैंड में कांग्रेस के प्रमुख नेता सर विलियम वैडरबर्न को एक पत्र लिखते हुए स्पष्ट कहा कि अंग्रेजों ने भारत के लिए अनेकों बार बहुत से वायदे और घोषणाएँ की लेकि दुर्भाग्यवश किसी भी वायदे को पूरा नहीं किया।24

सर विलियम वैडरबर्न ने राणा को जवाब में लिखाः ''केवल दो प्रतिशत भारतीय व्यक्ति ही तीन चार हजार (भारतीय) लोगों में बलिदान की भावना से प्रेरित हैं। मैं राणा से सहमत हूँ लेकिन केवल

दर्जन–भर व्यक्ति ही गोखले की तरह कार्य करने की विचारधारा रखते हैं। कोई भी मृत्यु से नहीं लड़ना चाहता। ऐसी स्थिति में हमारी ही तरह की पद्धति से कार्य करना एक मात्र विकल्प है।''24

विदेशों में रह रहे भारतीय क्रांतिकारी मानते थे कि जिस तरह से कांग्रेस अपने संचार माध्यमों से जो गतिविधियाँ और कार्यक्रम सरकार के सामने रख रही थी वह किसी भी तरह से ठीक नहीं थे। बिना निश्चित संघर्ष के ब्रिटिश साम्राज्यवादी विचारधारा को समाप्त नहीं किया जा सकता।24 आगे उन्होंने वैउरबर्न को लिखा : ''अंतिम संघर्ष भारत की स्वतंत्रता के लिए इंग्लैण्ड के हाउस ऑफ कान्ज में नहीं लड़ा जा सकता जैसा कि दादाभाई नौरोजी जैसे भारतीय विश्वास करते हैं लेकिन यह पहले भारत में अरब सागर के किनारों पर बम्बई के द्वीप पर सिमटे टाम्मी अटकिन्स एक छोर पर और बहादुर गौरखा, तेज सिक्कख, शक्तिशाली मराठे दूसरे छोर पर रह कर आपस में कंधे से कंधा मिलाकर अपने देश और इसकी शान के लिए लड़ेंगे तभी स्वतन्त्रता सम्भव होगी।25''

आचार्य कांग्रेस के कार्यक्रमों और सिद्धान्तों को उपयुक्त नहीं मानते थे और संवैधानिक सुधारों को केवल दृढ़ आक्रामकता के साथ बराबर दबाव बनाकर ही प्राप्त किया जा सकता था। कांग्रेस वर्ष में केवल तीन दिन का अधिवेशन करके अपने कार्यों की इतिश्री कर लेती थी। संवैधानिक तौर–तरीकों से ज्यादा प्राप्त होने की आशा नहीं की जा सकती थी।26 व्यापक आक्रमकता और क्रांति ही सब प्रश्नों का एकमात्र जवाब था। उनका मानना था कि विश्व में जिस देश ने कड़े संघर्ष का रास्ता अपनाया उन्हीं देशों ने विदेशी शक्तियों से छुटकारा पाया।27 इंग्लैंड ने भी संवैधानिक शक्ति मात्र संघर्ष के बल पर ही प्राप्त की थी और तभी राष्ट्रीय राज्य की स्थापना संभव हुई। आक्रमक शासकों से छुटकारा मिला। इंग्लैण्ड का स्वयं का उदाहरण है कि संसदीय प्रजातान्त्रिक प्रणाली को उसने कड़े संघर्ष के बाद प्राप्त किया और सामंतवादी व्यवस्थाओं से मुक्ति मिली।28

मार्क्सवादी व्यवस्था ने मजदूरी–पूंजीवाद के आपसी संबंधों के बारे में तत्कालीन स्थिति का सुक्षमता के साथ विश्लेषण किया गया। पाश्चात्य जगत में संरक्षता की नीति, सैनिक अभियान, प्रभावों और हस्तक्षेप के कारण साम्राज्यवादी विचारधारा को और भी मजबूती प्रदान की।29 पाश्चात्य जगत में पुनर्जागरण और धर्म सुधार आन्दोलनों ने उदारवाद, आर्थिक स्वतंत्रता, अहस्तक्षेप की नीति, राष्ट्रीय स्वराज्य, शांति एवं सम्पन्नता के द्वार खोले और यूरोप के राष्ट्रों में राजनीति और प्रशासन में व्यापक परिवर्तन के लिए संघर्षों की शुरुआत हुई। साम्राज्यवादी देशों का रवैया अपने उपनिवेशों के साथ विरोधाभाव का बना रहा। ब्रिटिश नौकरशाही उच्च शिक्षित भारतीयों के साथ भी दोयेम दर्जे का व्यवहार करने से नहीं चूकी। हमेशा विरोधाभाष का रवैया बना रहा।30

तत्कालीन यूरोप में कुछ ऐसी घटनाएँ घटी जिन्होंने संसार पर व्यापक प्रभाव डाला। इनमें रूस–जापान ऐसा युद्ध था जिसने भारतीय क्रांतिकारियों को बहुत प्रभावित किया क्योंकि जापान एशिया का छोटा से देश था जिसने यूरोप के बड़े राष्ट्र रूस को पराजित किया। जापान की राष्ट्रीय एकता

और उनके दृए निश्चय ने ही ऐसा कर दिखाया। इस विजय पर अनेकों लेख लिखे जो इंडियन सोशियोलोजिस्ट', 'तलवार', 'बन्दे मातरम', फ्री–हिन्दुस्तान', 'गदर', केसरी, मराठा, इंडियन मिरर, स्वदेशी मित्रा आदि क्रांतिकारी समाचार–पत्रों में प्रकाशित हुए।31 इस प्रकार राष्ट्रों के स्वतंत्रता संग्रामों, साम्राज्यवादी विरोधी भावना को व्यापक बल मिला। यूरोप में घट रही घटनाओं को समाचार–पत्रों ने अपने कालमों में काफी जगह दी। विदेशों में भारतीयों द्वारा सम्पादित समाचार–पत्रों में अनेक लेख और सम्पादकों के नाम पत्रों की तो कोई गिनती नहीं थी। आचार्य ने भी 'बन्दे मातरम' में अनेक लेख प्रकाशित किए और मैडम कामा की हर संभव सहायताकरता रहा।32

जापान की विजय ने भारतीय राष्ट्रवादियों के दिलों को प्रफुल्लित ही नहीं किया है, अपितु एशिया के लोगों में एक नया जोश भर दिया है। इस एशिया की विजय से तो ब्रिटिश संसद भी अछूती नहीं रही।33 यह विषय ब्रिटिश संसद में भी उठा।उदारवादी सांसदों ने स्वयं स्वीकार किया; ''इससे एक नई चेतना का संचार हुआ है, अगर इसको सही ढ़ंग से मान्यता नहीं दी जाती है, विचार नहीं किया जाता है, तो स्थिति का प्रभाव ऐसा पड़ सकता है जिसके बारे में हम सोच भी नहीं सकते।34

इस संगठन का जनक जोसेफ मैजिनी था जिसने प्रभावशाली ढ़ंग से देश में नई शक्ति का प्रादुर्भाव किया। पाश्चात्य समाजवादियों जैसे इंग्लैंड के समाजवादी नेता हैंडमैन ने तो स्पष्ट रूप से भारतीयों को मैजिनी के द्वारा अपनाई गई रणनीति अपनाने के लिए प्रेरित भी किया।35

हैंडमैन का मानना था कि संवैधानिक तौर–तरीकों से देश को कुछ भी प्राप्त नहीं होनेवाला था। उसने भारत के कांग्रेस नेता दादाभाई नारौजी को भारत का सबसे बुजुर्ग व्यक्ति कहा जाता था को पत्र के द्वारा समझाया और अलग रास्ता अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए लिखा : ''तुम न्यायप्रिय (भारतीय) लोग अपनी उदारता से क्या प्राप्त करोगे? (ब्रिटिश) आपको लात से मारते हुए और तुम्हें दण्डित करने के लिए षड़यंत्रकारी अधिनियम पास करते हैं और आपके बारे में झूठ बोलते हैं, इससे ज्यादा शक्ति के साथ और भी कुछ कर सकते हैं। उदारवादी भद्र पुरुष (तुम समझो) बजते हुए बैंड के प्रति ज्यादा आकर्षित न हुओ; हालाँकि उनकी बात सुनी जानी चाहिए लेकिन कभी नहीं सुनी जाती हैं।''36 ये शब्द वास्तविकता लिए हुए थे और सच्चाई का जानना जरूरी था जिसको सुना नहीं गया।

इससे प्रतीत होता है कि उनका भरतीयों को प्रेरित करने के लिए कितना योगदान रहा। भारतीय क्रांतिकारी जानते थे कि उनके योगदान को भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर काफी व्यापक रूप से आंका गया और काफी प्रेरणादायक भी रहा।37 यही वजह थी कि भारतीय क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए इटली के क्रांतिकारियों ने काफी प्रेरित किया।

तीसरा तथ्य आयरलैण्ड का होमरूल आन्दोलन था।38 जिसने इटली की तरह भारतीयों को भी काफी प्रेरित किया। जिस तरह भारतीय क्रांतिकारी विदेशों में राष्ट्रवादी गतिविधियों को बढ़ावा दे रहे थे तो आयरलैण्ड के क्रांतिकारी भी अपनी एक राजनीतिक–सांस्कृतिक पहचान बनाने के लिए उनके साथ

का कार्य कर रहे थे। दोनों ही देशों के क्रांतिकारियों का एक ही शत्रु था ब्रिटिश साम्राज्यवाद। अनेक देशों के क्रांतिकारी आपस में मिलकर आक्रामक, शोषणकारी, साम्राज्यवादी विचारधारा की भर्त्सना ही नहीं करते थे अपितु ऐसी शक्तियों की विश्व के पटल से भी समाप्त करने के लिए तत्पर थे।39

ब्रिटिश ने जब 1886 और 1893 में आयरलैण्ड होमरूल पास नहीं होने दिया तो आयरलैण्ड के क्रांतिकारियों के साथ–साथ भारतीय क्रांतिकारी भी काफी मायूस हुए क्योंकि सबका यह विचार था कि जब ब्रिटेन आयरलैण्ड को स्वराज्य दे देगी तो उसके बाद भारत को भी होमरूल (स्वराज्य) प्राप्त हो जाएगा। जब ऐसा संभव नहीं हो पाया तो आयरलैण्ड में सिन–फिन आंदोलन की शुरुआत होते देर नहीं लगी। इस आंदोलन ने एकदम उग्र रूप धारण कर लिया।40ऐसी स्थिति में सभी क्रांतिकारियों ने सामूहिक तौर से निर्णय लिया कि दोनों देशों के क्रांतिकारी मिलकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध अपना संघर्ष तब तक जारी रखें जब तक ध्येय की प्राप्ति न हो जा जाए।41

आचार्य और अन्य भारतीय क्रांतिकारी युवकों ने देश के लिए स्वराज प्राप्ति को काफी महत्वपूर्ण मानकर देश में और बाहर भी अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के द्वारा अपने संदेशों का प्रचार–प्रसार करते रहे। भय का वातावरण बनाने में लगे रहे क्योंकि व्यक्ति हमेशा भय से ही पीछे हटता है। आयरलैण्ड के क्रांतिकारियों ने भी अपने देश में स्वदेशी, बायकॉट और राष्ट्रीय शिक्षा जैसे आंदोलन को देश के पटल पर रखकर आयरलैण्ड के लोगों का ध्यान आकर्षित किया।42

आयरिश क्रांतिकारियों के पद–चिह्नों पर चलकर भारतीय क्रांतिकारियों ने भी ऐसे ही कार्यक्रमों को प्रमुखता दी जो उत्पादनकर्ता और उद्यमियों से सीधे जुड़े हुए थे। अंग्रेजों ने भारत को एक बाजार की तरह व्यवहारित किया और अपने माल को व्यापक स्तर पर भारत में बेचा। भारत में उपभोक्तावाद की संस्कृति को विकसित किया। अगर ब्रिटिश माल की बिक्री भारत में नहीं होती तो ब्रिटेन की आर्थिक नीति दम तोड़ देती। भारत एक अर्द्धमहाद्वीप के समान था और जनसंख्या के हिसाब से भी काफी बड़ा देश था जिससे इंग्लैण्ड के अनेक हितों की पूर्ति संभव थी।43 भारत का संबंध राजनीति तौर से भी ज्यादा आर्थिक तौर पर था क्योंकि इसका ब्रिटेन की अर्थ–व्यवस्था से सीधा सम्पर्क था।44 पश्चिमी भारत के एक प्रसिद्ध समाचार–पत्र ने आयरलैण्ड के क्रांतिकारियों के कार्यक्रमों की सराहना करते हुए स्पष्ट रूप से लिखा : ''हमें आयरलैण्ड में हो रहे नए आंदोलन से प्रेरणा लेनी होगी क्योंकि आयरलैण्ड के जमींदारों और कृषकों ने ईश्वर की कृपा से अपने सभी मतभेद भुला दिए हैं और उनके विचार स्वदेशी के अनुरूप बनते जा रहे हैं। कई आंदोलन देश में प्रारंभ किए जा रहे है जो देश में विकसित होकर अपनी जड़ें मजबूत करने में कार्यरत हैं। इस प्रकार विदेशी आंदोलन का भारत पर लगातार प्रभाव पड़ा है।''45

तत्कालीन स्थिति में रूस में एक अन्य तरह की विचारधारा का आगमन हुआ जिसने जो जार की शक्ति को समाप्त कर एक नई तरह की जनवादी शासन–व्यवस्था स्थापित की थी। रूस जापान

द्वारा हार खाने के पश्चात् एक राष्ट्रव्यापी निराशा आई जिसने जन–मानस को झकझोर कर रख दिया। किसान–मजदूर व्यापक स्तर पर शोषण का शिकार हो रहे थे लेकिन सैनिकों का साथ नहीं था और न ही राष्ट्रीय स्तर का नेतृत्व मजबूत था। किसानों, मजदूरों में आंदोलन सक्रिय था लेकिन सक्षम नेतृत्व का अभाव था। ऐसी स्थिति में क्रांति ने जन्म लिया जो अपनी तरह की पहली वैचारिकता पर आधारित थी।46 इस क्रांति ने विश्व में नये आयाम प्रस्तुत किए। प्रसिद्ध दार्शनिक कार्ल मार्क्स ने जो सिद्धांत प्रतिपादित किये उनका सर्वप्रथम व्यावहारिक रूप से रूस में स्थापित हुआ। रूसी समाज के सर्वहारा वर्गों ने मिलकर जार की अधिनायकवादी विचारधारा के जन–आक्रोश को शिखर पर पहुँचा दिया। इसका विरोध होना प्रारंभ हो गया और जनसत्ता की भावना दिनों–दिन जोर पकड़ती गई।47

जनता को ज्यादा से ज्यादा अधिकार देने की बात जार को दिये गये याचना–पत्र में स्पष्ट की गई थी। व्यापक रोष एवं दबाव के कारण जार ने अन्ततः एक नये संविधान की स्थापना को मान लिया जिसके अंतर्गत प्रेस की स्वतंत्रता, भाषण देने और संगठन बनाने की बात भी मान ली गई। परंतु बाद में जार ने अपने वायदे को नहीं निभाया। इसका अन्ततः यह परिणाम निकला कि रूसी जन–मानस में विद्रोह की भावना हिलोरे लेने लगी। स्थिति पर जल्दी ही काबू पा लिया गया। मगर इस आंदोलन ने एक ऐसी ज्वाला को पैदा कर दिया जिसकी चिंगारियाँ अनेक स्थानों पर पड़नी शुरू हो गई। इसका तत्कालीन प्रभाव चीन, भारत, तुर्की, प्रशिया आदि देशों पर पड़ना स्वाभाविक था क्योंकि इन देशों में भी स्थिति भयावह थी।48

विदेशों में हो रही इस तरह की गतिविधियों ने अपना प्रभाव तो दिखाना ही था। राष्ट्रवादी विचारधारा का तेजी से प्रचार–प्रसार होने लगा। भारत के बंगाल प्रांत में स्थिति दिनों–दिन बदल रही थी। उस पर काबू पाने के लिए तत्कालीन गवर्नर–जनरल लार्ड कर्जन ने बंगाल को दो भागों में बांटने का निश्चय किया क्योंकि समस्त बंगाल में क्रांतिकारी विचारधारा व्यापक स्तर पर गुप्त रूप से चल रही थी। उसको विराम देने का एक ही उपाय तत्कालीन ब्रिटिश शासन को बंगला–विभाजन में दिखाई दिया।49 जब विभाजन हुआ तो उदारवादी कांग्रेसी नेताओं ने भी इसका विरोध किया। वे भी इससे स्तब्ध थे। बंगाल का युवा वर्ग तो और भी ज्यादा सरकारी की इन नीति से खफा था।

इटालियन, आयरिस और रूसी क्रांतिकारियों द्वारा स्थापित गुप्त संगठनों से प्रेरणा लेकर भारत में भी गुप्त संगठन बनने प्रारंभ हो गये। इंग्लैंड में भारतीय क्रांतिकारियों ने भी इसकी जरूरत समझी कि केवल रूसी तौर–तरीकों से ही भारतीयों को शोषणकारी और दमनकारी शक्तियों से निजात मिल सकते है।50 संभवतः ऐसा सोचना शायद उपयुक्त भी था। यह आश्चर्य की बात थी कि जिस तरह से घटनायें घटित जो रही थी वह सुखे जंगल में आग की तरह थी। अनेक घटनाएँ घटती रहने के कारण अन्य देशों के क्रांतिकारियों को उनसे प्रोत्साहन मिलता चला गया। श्यामजी कृष्णवर्मा, मैडमकामा, एस.

आर. राणा, आचार्य आदि भारतीय क्रांतिकारियों ने ब्रिटेन में सभी देशों से क्रांतिकारियों से अपने सम्पर्क स्थापित करने प्रारंभ कर दिए थे।

इंग्लैण्ड में उस समय मिश्र, ईरान, रूस, आयरलैण्ड आदि देशों के क्रांतिकारियों ने स्थिति को देखते हुए भारतीय क्रांतिकारियों को अपना हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी देशों के क्रांतिकारियों के सामने तो सामान्य समस्यायें थीं जैसे अधिनायकवादी और शोषणकारी शक्तियाँ जो लगातार देशों को निर्धन बना रही थी की समाप्ति हो ताकि सभी देशों का राष्ट्रीय विकास संभव हो सके। संगठन और समाचार–पत्रों से भी इस तरह की आवाज आ रही थी कि लोगों की भावनाओं को ज्यादा समय तक दबाया नहीं जा सकता था। इसकी वजह यह थी कि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक नई लहर के आगमन के लक्षण दिखने प्रारंभ हो गये थे।51

लन्दन में 'इण्डिया हाउस' के तत्वाधान में होने वाले कार्यक्रम और गतिविधियाँ लगातार बढ़ रही थी। यानि कि समस्त गतिविधियाँ इसी से संचालित की जाती थीं। यहाँ पर संगठन के रूप में इंडियन होम रूल सोसायटी थी तो 'इंडियन सोशियोलोजिस्ट' प्रेस के रूप में स्थापित हो चुका था। इसके अतिरिक्त हाईड पार्क में प्रत्येक रविवार को मीटिंगें, भाषण आदि अनेक भारतीय विषयों पर कार्यक्रम होते रहते थे। आपसी संवाद और वाद–विवाद के द्वारा निष्कर्ष पर पहुँचा जाता था कि भविष्य में किस तरह की कार्यवाही की आवश्यकता थी। भाषण, वाद–विवाद और फैलोशिप के द्वारा वातावरण में जोश विद्यमान होने लगा।52 भारतीय युवकों को बम्ब बनाने, अस्त्र–शस्त्र का प्रशिक्षण देना और विस्फोटक तत्वों की जानकारी देना महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम थे। धीरे–धीरे भारतीयों की इन गतिविधियों की जानकारी ब्रिटिश पुलिस तक जाने लगी तो भारतीय क्रांतिकारियों के तौर–तरीकों और उनकी गतिविधियों पर कड़ी निगरानी के आदेश अधिकारियों को दिए गए।53 अगर तत्कालीन स्थिति को ध्यान में रखकर इन कार्यक्रमों और गतिविधियों का विश्लेषण किया जाए तो कहना पड़ेगा कि भारतीयों द्वारा किए गए वे कार्य काफी मायने रखते थे। विदेशी धरती पर ऐसा करना कम बात नहीं थी।

भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा लंदन में किए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी ब्रिटिश पत्रों, पत्रिकाओं और यहाँ तक कि संसद को भी प्राप्त होने लगी। ब्रिटिश संसद में एक सांसद जे0 डी0 रीज ने भारतीयों के कारनामों का लेखा–जोखा पेश किया और भारत मंत्री जॉन मारले का ध्यान आकर्षित करते हुए उनसे इस विषय में जानकारी मांगी। भारतीय युवक इंग्लैंड में क्यों सक्रिय थे और सरकार को उनकी गतिविधियों के बारे क्या जानकारियाँ थी।54 जॉन मारले ने उत्तर में उन्हें सभी जानकारी दी और उठाये गए कदमों की भी जानकारी दी। रीज उनके उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए बल्कि मारले को सुझाव दिया कि ब्रिटिश पब्लिक प्रोसिक्यूटर को सख्त चेतावनी दी जाए कि जो भारतीय शिक्षा ग्रहण कर रहे थे उनमें सरकार–विरोधी गविविधियाँ न पनपने दे। जो भारतीय विद्यार्थी इस गतिविधियों में लगे हुए थे उनके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जाए। रीज जो कन्जर्वेटिव पार्टी का सदस्य था का यह

सुझाव जान मार्ले ने उपयुक्त नहीं माना क्योंकि ऐसा करना तत्कालीन स्थिति में व्यावहारिक नहीं था।55

आचार्य एवं अन्य भारतीय क्रांतिकारियों को ब्रिटिश सरकार के मनसूबों का पता लगने लगा और सरकारी रवैये के प्रति सन्देह व्यक्त किया गया। श्यामजी कृष्णवर्मा लंदन में सभी क्रांतिकारी संगठन और सभी तरह की गतिविधियों का संचालक था उसे भी यह अहसास होने लगा कि सरकार कोई भी कार्यवाही उनके विरूद्ध कर सकती थी। वही उन गतिविधियों को हर तरह से प्रेरित करने वाला था।56 ऐसी स्थिति में यदि उनको गिरफ्तार कर लिया गया तो आगे कोई भी गतिविधियाँ संभव नहीं होगी। इस प्रकार श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्थिति का आंकलन करके लन्दन छोड़ना ही उपयुक्त लगा। यद्यपि ब्रिटिश कानूनों के अंतर्गत उसके विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती थी लेकिन डर की स्थिति बराबर बनी हुई थी। 'इंडियन सोशियोलोजिस्ट' जिसके माध्यम से सरकार की कड़ी आलोचना की जाती थी के भारत में प्रवेश पर सरकार ने कड़ा प्रतिबंध लगा दिया लेकिन गुप्त रूप से इस पत्र की प्रतियाँ देश में लगातार आती रहीं। दूसरे देशों से अन्य पते पर भारतीय क्रांतिकारियों को प्रकाशित सामग्री मिलती रही। डाकखानों में कार्यरत अधिकारी भी भारतीयों के इस रहस्य को नहीं किसी भी तरह से जान सके। यह वास्तव में उनकी बुद्धिमता का कार्य था कि ऐसे कड़े प्रतिबंधों के बावजूद प्रकाशित सामग्री देश में आती रही।57

श्यामजी कृष्णवर्मा, एस0 आर0 राणा और मैडम कामा ने परिस्थितियों को जानकर अचानक इंग्लैण्ड छोडना ठीक समझा। अब जाएं तो कहाँ जाएं यह प्रश्न उनके सामने था। काफी सोच–विचार कर गहनता के साथ स्थिति का आंकलन करके वे इस निर्णय पर पहुँचे कि फ्राँस ही एक मात्र ऐसा राष्ट्र है जहाँ से वे अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को बराबर जारी रख सकते थे। यह वही देश था जहाँ पर सबसे पहले स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृ भावना के नारे लगे थे। व्यापक स्तर पर स्थिति में बदलाव आया था। इसी देश में जाने की उन्होंने राह पकड़ी। अब प्रश्न था कि लंदन में उनके बाद वहाँ की गतिविधियों को कोन संचालित करेगा। अन्ततः निर्णय लिया कि इंडिया हाउस और क्रांतिकारी गतिविधियों की कमान विनायक दामोदर सावरकर ही संभालेगा। उसने फैलोशिप प्राप्त करके एक प्रसिद्ध पुस्तक 'दी इंडियन वार ऑफ इण्डिपैंडैन्स' लिखी जो मूलतः 1857 की क्रांति से संबंधित थी। ब्रिटिश शोध–संस्थानों से सामग्री एकत्रित करके पुस्तक के द्वारा यह प्रमाणित करने का उन्होंने प्रयास किया कि यह 1857 की क्रांति भारत का 'प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' थी।58 उनका मानना था कि इसमें सभी भारतीय वर्गों ने अपना उचित योगदान दिया और उनके देशभक्ति की प्रशंसा का काफी तार्किकता के साथ वर्णन भी किया गया था। इस पुस्तक के पढ़ने के बाद यह कहा जा सकता है कि सावरकर एक बुद्धिमान लेखक ही नहीं था बल्कि प्रत्येक तथ्यों को काफी तार्किक ढ़ंग से प्रस्तुत करके यह प्रमाणित भी किया कि वह सच्चा राष्ट्रभक्त भी था।59

लंदन में सावरकर और आचार्य ही कार्यरत रहे और दोनों अपना योगदान देते रहे। सावरकर ने उसी समय इटली के प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता जोसेफ मैजिनी के द्वारा लिखी गई अपनी आत्मकथा का उन्होंने मराठी भाषा में शानदार अनुवाद भी किया।60 भारत की अनेक प्रान्तीय भाषाओं में भी इसका अनुवाद भारतीय राष्ट्रवादियों ने किया क्योंकि इस पुस्तक में क्रांतिकार संगठनों की गतिविधियों के के द्वारा तत्कालीन विषम परिस्थितियों में कैसे क्रान्ति को आगे बढ़ाया जाना चाहिए, किस रणनीति की आवश्यकता थी आदि का विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत देशों के लिए भी यह पुस्तक प्रेरणादायक थी। युवा क्रांतिकारियों को गुप्त संगठनों के द्वारा कैसे संगठित किया जाए ताकि शोषणकारी और आक्रामक ताकतों को कैसे मात दी जाए आदि की भी जानकारी इसमें उपलब्ध थी।61

प्रमुख भारतीय क्रांतिकारियों के प्रस्थान के बाद आचार्य को इण्डिया हाउस में अपनी जिम्मेदारियों का एहसास भी हुआ और उसे खुशी थी कि वह अपने ही देश के लोगों के साथ लन्दन में रहकर वह देश के लिए कार्य करता रहेगा। इंग्लैण्ड में रहने और खाने की व्यवस्था उपयुक्त थी और मन से काम भी करने का इच्छुक था। उन्होंने अपने एक लेख में लिखा कि जब वह आया था तो न तो किसी को विशेष रूप से जानता था और न ही उसका कोई संबंधी वहाँ पर विद्यमान था।62 अपना देश छोड़कर अनेक कष्टों को सहता हुआ पहले तो फ्रांस पहुँचा फिर लन्दन में आया। उन्होंने लिखा कि उसकी यह कहानी बड़ी ही कष्टदायक के साथ–साथ दिल दहला देनेवाली भी थी, क्योंकि धन के अभाव के कारण, तन पर पहनने के ठीक वस्त्र न होने के कारण उसे कैसे–कैसे अपनी यात्रा सर्दी में बिता कर, भूखों रहकर मन को शांत करता रहा। उनका मानना था कि देश सेवा की अपेक्षा ये कष्ट सहने लायक थे। यह उसकी देशभक्ति की भावना ही तो थी जो अपना घर छोड़कर और यहाँ तक अपने सख्त बीमार पिता को भी अन्तिम क्षणों में मृत्यु शैय्या पर छोड़कर लंदन गया।63 निसन्देह यह उसकी देशभक्ति का सबसे बड़ा कारनामा था जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

सावरकर ने जब इण्डिया हाउस का नेतृत्व अपने हाथ में लिया तो गुप्तचर विभाग यहाँ पर आने वालों पर गुप्त रूप से उनका ध्यान रखता एवं उनकी सभी गतिविधियों की जानकारी रखने लगा। जो अध्ययनरत भारतीय विद्यार्थी आते थे, उन पर भी पुलिस का गुप्तचर विभाग निगरानी रखता था। ऐसी विषम परिस्थितियों में रहकर कार्य करना वास्तव में सच्ची देशभक्ति थी। वे किसी भी तरह के षड़यंत्र में शामिल नहीं थे जैसा कि ब्रिटिश अधिकारी बराबर कहते रहते थे।64 राष्ट्र के हितों के लिए ब्रिटिश गुप्तचर विभाग द्वारा इस तरह के शब्दों का प्रयोग करना भारतीयों के लिए वास्तव में अपमानजनक था। जो भी भारतीय विद्यार्थी इंडिया हाउस में आते थे अब ऐसी स्थिति में उनका आना बंद हो गया था। वे खतरे को जान चुके थे कि कहीं ब्रिटिश सरकार उनको शैक्षणिक संस्थाओं से निष्कासित न कर दे।65

आचार्य और सावरकर दोनों ही इण्डिया हाउस के सक्रिय सदस्य बने रहे। आचार्य सावरकर को हर पल सहायता देता करता रहा। चाहे साप्ताहिक मीटिंगे थी या अन्य कार्य। हाईड पार्क में रविवार को भाषण का पूर्वानुसार कार्यक्रम का दौर चलता रहा जिसमें सावरकर आदि अन्य भारतीय भारतीय इतिहास के अनेक विषयों पर लोगों को जानकारी देते थे जिससे देशभक्ति और समर्पण की भावना युवा भारतीयों में लगातार बराबर बनी रही। वह काफी शिक्षित था और बम्बई विश्वविद्यालय से कला निष्णांत की परीक्षा प्रथम श्रेणी में भी पास की थी। लंदन में आकर इण्डिया ऑफिस लायब्रेरी में शोध करते हुए काफी मात्रा में शोध सामग्री एकत्रित की थी जिसका प्रयोग उसने पुस्तक और लेखों –भाषणों आदि में किया।66

विषयों को साथ रखकर अच्छे ढ़ंग से प्रस्तुत करने का उसमें हुनर था। कई तो उसको पसन्द नहीं करते थे लेकिन उसके भाषण सुनने के लिए जरूर आते थे क्योंकि वह एक अच्छा वक्ता था। भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का अच्छा ज्ञान था क्योंकि उन्होंने काफी अध्ययन किया था। वह अनेक विषयों पर धारा–प्रवाह बोल सकता था। विषय और भाषा के बारे में उसका कोई जवाब नहीं था। उस समय के क्रांतिकारियों में उसका स्थान काफी महत्वपूर्ण था। अपनी विद्ववताके कारण ही वह भारतीय और विदेशी क्रांतिकारियों में काफी लोकप्रिय हो गया था और अन्ततः आन्दोलनों को नेतृत्व भी प्रदान किया।67

1907 में भारतीय क्रांति के पचास वर्ष पूरे होने वाले थे। ब्रिटिश सरकार ने अपनी जीत की गोल्डन जुबली मनाने का निर्णय लिया। अनेक कार्यक्रमों की घोषणा की गई। लंदन में जब भारतीय क्रांतिकारियों को सरकार के निर्णय का पता चला तो उन्होंने भी उसी तरह अपने कार्यक्रम बनाए और उस घटना को मनाने का निश्चय किया। भारतीय क्रांतिकारियों के नेता श्यामजी कृष्णवर्मा ने उस दुखद क्रान्ति जिसमें कई लाख लोगों की जान गई और सम्पत्ति का भी भारी नुकसान हुआ एक दुखद घटना मानते थे। एक अंग्रेजी विद्वान डॉ॰ कांग्रेवे ने भारत पर एक पुस्तिका लिखी जो मूलतः 1857 की क्रांति पर ही थी।68 उसमें उन्होंने लिखा : ''1857 की दुखद और विस्मरणीय घटना के पचास वर्ष मनाने की तैयारी हो रही है लेकिन मेरे लिए यादगार के वे महान् क्षण एक दुखभरी घटना के समान हैं। फील्ड मार्शल लार्ड राबर्टस जैसे शिक्षित अंग्रेज आज उस घटना को मनाने का निर्णय ले रहे हैं जिसमें बहादुर भारतीय सेना को नीचा देखना पड़ा; जब हजारों लोगों – हिन्दू और मुसलमानों को धार्मिक कृत्यों के द्वारा अंग्रेजों के हाथों का शिकार होना पड़ा। यह मामला वास्तव में मृत्यु से भी ज्यादा घिनौना था.... माँस की गोलियों का बहादुर सैनिकों द्वारा प्रयोग करना एक बड़ी अपमानजनक घटना थी। उस क्रांति के समय दिल्ली में युवक राजकुमारों (बहादुरशाह जफर के लड़के) को उनके बाप के सामने ही मार दिया गया। युद्ध में बनाए गए युद्ध बंदियों को गाजर मूली की तरह काट दिया गया। अनेक भारतीयों को तो हडसन के घोड़ों द्वारा निर्दयता के साथ रौंदा गया।69

भारतीय क्रान्तिकारियों का मानना था कि इस दुखद घटना को मनाने का निर्णय तो मानवता के कारण गलत था। तत्कालीन खूनी क्रांति को भूल जाना ही अच्छा था। लन्दन में शेफ्टसबरी एवन्यू में एक भारतीय द्वारा संचालित होटल में अनेक क्रांतिकारी भारतीय एकत्रित हुए। श्यामजी कृष्णवर्मा ने घोषणा की कि सभा के अध्यक्ष भारतीय बैरिस्टर जे0 एम0 पारिख होंगे। उन्होंने अपने भाषण में भारत की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा कि उनके देश का भविष्य राजनीतिक मुक्ति से ही सुधरेगा जो 'रोशनी (भारत की स्वतंत्रता) भारत से बाहर' चली गई थी, उसे पुनः प्राप्त करना आवश्यक था।70 सभा में उपस्थित सभी ने श्यामजी कृष्णवर्मा के द्वारा चलाई जा रहे कार्यक्रमों का स्वागत किया क्योंकि उसी माध्यम से एक नये भारत का निर्माण संभव होगा। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि उनको आजादी प्राप्त होगी। 'दासों की तरह से जीवन बिताने से तो मर जाना ही ठीक होगा। उस समय तीन करोड़ लोग अकाल और सूखे से मर चुके थे। सैन्य ज्ञान देने के लिए छात्रवृत्तियाँ देने की अति आवश्यकता है जिससे युवा भारतीय बन्दूकों और संगीनों का सही ढंग से ज्ञान प्राप्त कर सकें। उनके जापानी मित्रों ने यह (1905 में) प्रमाणित कर दिया था।71 इससे स्पष्ट होता है कि वे तलवार का मुकाबला तलवार से करने के पक्षघर थे।

ब्रिटिश सरकार के निर्णय को ध्यान में रखते हुए भारतीयों ने निश्चय किया कि वे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को लंदन में हर वर्ष स्मृति के रूप में मनाते रहेंगे क्योंकि इसी के द्वारा वे उन बहादुर भारतीयों की कुर्बानी को याद करेंगे जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण दिए। उसी समय एक क्रांतिकारी लघु–पुस्तिका का विमोचन भी किया गया जिसका शीर्षक था 'आह! मार्टायर'।72 इस लघु पुस्तिका में भारतीयों की बहादुरी की प्रसन्नसा की गई थी कि किस तरह से उन्होंने अपने देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। उनके दिए गए बलिदान को बेकार नही जाने देंगे और जल्दी ही उनकी कुर्बानियों का बदला ही नहीं लिया जायेगा बल्कि देश को भी स्वतंत्र कराया जायेगा। इस लघु पुस्तिका में उन भारतीयों को शहीद का दर्जा दिया गया और उनको बड़े ही मार्मिक रूप से श्रद्धांजली भी दी गई।73

भारत सरकार के गुप्तचर विभाग को जब इस पुस्तिका की जानकारी मिली तो भारत के वायसराय लार्ड मिन्टो ने भारत मन्त्री लार्ड मार्ले को एक पत्र के द्वारा जानकारी दी कि लंदन इण्डिया सोसायटी की गतिविधियों के तत्वावधान में ही इसका प्रकाशन हुआ। इसके साथ ही पत्र में याचना भी की गई कि लंदन में भारतीयों द्वारा इस तरह की षड़यंत्रकारी और घृणात्मक गतिविधियों पर जागरूक रहने की अति आवश्यकता थी और सुझाव दिया कि कुछ ऐसे उपाय किये जाएं जिससे कि उनकी हर प्रकार की गतिविधियाँ आगे नहीं बढ़ सके।74

सहायक भारत मंत्री ली–वारनर के गुप्चर विभाग की जब रिपोर्ट मिली तो उन्होंने लार्ड मार्ले को इसकी तुरंत जानकारी दी कि ''भारतीय क्रांतिकारियों के संगठनों ने कई ब्रिटिश अधिकारियों को

अपना निशाना बनाने और उनको भयभीत करके भारतीय अपने उद्देश्यों को पूरा करना चाहते थे। पाश्चात्य देशों से उन्होंने भारत में काफी विस्फोटक सामग्री को भी नियति किया था। ब्रिटिश पुलिस की भर्त्सना करते हुए आगे कहा कि उनकी इस नाकामी से ही ऐसा होता रहा उनका गुप्तचर विभाग न तो हिंदू और मुसलमानों में भेद कर पाया और न ही यह षड़यंत्रकारी और शांतिप्रिय लोगों की गतिविधियों को समझ सकी।''75

जब कभी पुलिस को भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियों की जानकारी मिलती थी तो कड़ी कार्यवाही की जाती थी। लोगों के साथ अमानवीय और आक्रामकता का व्यवहार किया जाता था। इसी कारण अनेक भारतीय क्रांतिकारी विदेशों में चले गये ताकि बाह्य शक्तियों के साथ मिलकर देश को स्वतंत्र करा सके। आचार्य की पांडिचेरी में उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों पर ब्रिटिश सरकार ने कड़ी निगरानी रखनी प्रारंभ कर दी। ऐसी स्थिति में उनकी गतिविधियाँ आगे नहीं बढ़ सकी। उसे इंग्लैण्ड में भी ब्रिटिश पुलिस की कार्य–प्रणाली ठीक नहीं लगी। उसका मानना था कि स्वतंत्र इंग्लैण्ड में भी लोगों के साथ अमानवीय व्यवहार होता था। ब्रिटिश पुलिस की भारतीयों के प्रति रवैये में किसी तरह का परिवर्तन नहीं आया था। सबके सामने बस एक ही प्रश्न था कि इंग्लैण्ड में क्या इसी तरह की स्वतंत्रता थी, हालाँकि वह ब्रिटेन में जाना नहीं चाहता था।76 क्योंकि वे पेरिस के राजनीतिक सौर्हादपूर्ण वातावरण में ही अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखना चाहते थे। इंग्लैण्ड में रह रहे कई भारतीयों का व्यवहार उपयुक्त नहीं था। कुछ भारतीय तो अपने मकान मालिकों के ईर्दगिर्द ही रहते थे और बाह्म वातावरण को पसन्द भी नहीं करते थे। जिन भारतीयों की ऐसी मानसिकता थी वे देशभक्त भारतीयों से संपर्क बनाने में विश्वास नहीं करते थे। ब्रिटिश वासियों का व्यवहार ऐसे भारतीयों से अच्छा था। वे अपने जीवन के ध्येय प्राप्ति के अतिरिक्त किसी से कोई वास्ता नहीं रखते थे।77

इंग्लैण्ड की स्काटलैण्ड यार्ड भारतीयों की अब हर तरह की गतिविधियों की निगरानी रखने लगी और गुप्त रूप से उनका पीछा भी करती रहती थी। पुलिस अब सभी भारतीयों को शक की दृष्टि से देखती थी। ऐसी स्थिति में कई तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इनमें प्रमुख था शिक्षा संस्थानों में प्रवेश का। इस तरह की स्थिति को देखते हुए भारतीयों ने इंडिया हाउस की रविवार सभाओं को कुछ समय तक स्थगित करना पड़ा।78 ब्रिटिश पुलिस ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारतीय की गतिविधियों और कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार लंदन में बराबर चलता रहा। हालाँकि उनकी सभायें ज्यादा नहीं होती थी क्योंकि उनसे कई अंग्रेज भी जुड़े हुए थे। लंदन में हो रही इंडिया हाउस की गतिविधियों में धीमापन आने लगा क्योंकि इसके सदस्यों की संख्या लगातार गिरती चली गई। एक तरह से उसकी गतिविधियों में ठहराव सा आ गया था जो वास्तव में चिंता का विषय था।79

प्रारंभ में जो भी भारतीय क्रांतिकारी लंदन में इण्डिया हाउस में जाता था तो कुछ समय तक उसकी गतिविधियों की जांच की जाती थी। कहीं वह पुलिस को सूचना देने वाला तो नहीं था। इस

तरह का एक वाक्या पहले हो चुका था। एक भारतीय कीर्तिकर ने भारतीय क्रांतिकारियों की गतिविधियों की जानकारी ब्रिटिश पुलिस को दी। ऐसी स्थिति में उनको अनेक समस्याओं से जूझना पड़ा। इस स्थिति में क्रांतिकारियों ने सभी भारतीयों की परीक्षा लेना उचित समझा क्योंकि मुखबिर होने का डर भी बना रहता था। कड़ी लाँच–परख कर ही उनमें विश्वास किया जाने लगा।80

जब आचार्य वहाँ गया था तो उसे भी इसी तरह की प्रक्रिया से गुजरना पड़ा। उसने शपथपूर्वक विश्वास दिलाया कि वह अपनी करनी–कथनी में कोई कसर नहीं छोड़ेगा तभी उसे इंडिया हाउस में रहने की अनुमति मिली। विश्वास बनने के बाद ही उनके सभी तरह के खर्चों का वहन इंडिया हाउस में भारतीयों द्वारा उठाने का निर्णय लिया क्योंकि उसकी गतिविधियों ने यह साबित कर दिया था कि उसमें देश के प्रति वफादारी कूट–कूट कर भी हुई थी। उसने शपथपूर्वक कहा कि जो जिम्मेदारियाँ उसे सौंपी जायेंगी उनको वह अपनी जी जान से उनका निर्वहन करने से पीछे नहीं हटेगा।81

इसमें कोई संदेह नही कि इंडिया हाउस वास्तव में एक महत्वपूर्ण केन्द्र भारतीय क्रांतिकारियों का था जिसमें अनेक तरह के प्रशिक्षण दिये जाते थे जो तत्कालीन स्थिति में अति महत्वपूर्ण थे। क्रांतिकारी साहित्य के प्रकाशन और वितरण का कार्य भी काफी महत्वपूर्ण था और अपने प्रचार–प्रसार के माध्यम से उसे लोकप्रिय बनाने का कार्य वास्तव में बड़ा ही महान था। ब्रिटेन का गुप्तचर विभाग उनकी देशभक्ति की इन गतिविधियों को कतई पसंद नहीं करता था उनको 'षड़यंत्रकारी और 'क्राउन के विरूद्ध बगावत' की संज्ञा दी गई। भारतीय क्रांतिकारियों का देश और विदेश में रहे सभी का एक प्रमुख ध्येय था कि 1857 की क्रांति जैसी क्रांति पुनः हो ताकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जड़ों को सदा के लिए भारत से खत्म किया जाए।82

दूसरी तरफ ब्रिटिश पुलिस ने भी उनकी गतिविधियों की जानकारी जुटाने में किसी तरह की कोई कसर न छोड़ी। ब्रिटिश पुलिस ने एक भारतीय कीर्तिकर को इंडिया हाउस का गुप्त रूप से सदस्य बनवाया ताकि हर तरह की जानकारी एकत्रित की जा सके। कीर्तिकर की जब समस्त गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हुई तो उसके कमरे की तलाशी ली गई और कुछ इस तरह के प्रमाण मिले जिससे यह साबित हुआ कि उसका ब्रिटिश पुलिस के साथ कहीं न कहीं संबंध अवश्य था जिसने सभी को भयभीत कर दिया था।83

इतना सब हो जाने के बाद न तो उसने भविष्य में फिर करने का आवासन दिया कि वह आगे से ऐसा नहीं करेगा। लेकिन वी.वी.एस. अय्यर ने स्थिति को तुरंत संभाल लिया और अय्यर के द्वारा ही तैयार की गई रिपोर्ट ही पुलिस को भेजी जाने लगी। ब्रिटिश पुलिस को ऐसी खबरें दी जाने लगी जो वास्तव में ठीक नहीं थी। इसमें कोई संदेह नहीं कि उन्होंने स्थिति को बिगड़ने नहीं दिया और भविष्य में उन्होंने विश्वास के साथ अपनी गतिविधियों को चलाने में अपनी कुटनीति और कार्यकुशलता का ऐसा परिचय दिया जो वास्तव में सराहनीय था।84 इसमें उनकी महानता की झलक दिखती है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि जब ब्रिटिश सरकार ने 1857 की क्रांति को विफल बनाने और भारत में अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के कारण एक बड़े आयोजन करने का निश्चय किया। ब्रिटिश सरकार की यह गतिविधि भारतीयों को नीचा दिखाने का एक तरह का बड़ा कार्य था। यही वजह थी कि उस महान संघर्ष को ब्रिटिश ने मात्र 'सैनिक क्रांति' करार दिया जो बिल्कुल गलत था। ऐसा करना भारतीयों की भावना को आहत करना था। यह घटना विचलित करने वाली थी। भारतीय क्रांतिकारियों ने निर्णय लिया कि इसके विपरीत आजादी की प्रथम जंग के रूप में वे भी इसे मनायेंगे।85 इंग्लैण्ड में क्रांतिकारियों ने ऐसे अवसर पर सभी ने जोसिले भाषणों के द्वारा 1857 के शूरवीरों को श्रद्धांजलि दी क्योंकि उन्होंने आजादी के इस आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर अपना योगदान दिया था। इस उत्सव पर उपस्थित क्रांतिकारियों ने नाना साहब, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, कुंवरसिंह, मौलवी अहमद साहब आदि की तस्वीरों को नमन किया और उन पर माला पहनाई गई। अपने भाषणों में उनकी शहादत को नमन और स्मरण किया गया।86 उन्होंने निर्णय लिया कि प्रत्येक 10 मई को उनकी स्मृति के रूप में 'शहीदी दिवस' मनाया जायेगा। उस सभा में यह भी निर्णय लिया कि उनके सपनों को साकार करने में वे कभी भी पीछे नहीं रहेंगे और उनके मार्ग–दर्शन के अनुरूप कार्य करते रहेंगे।87

आचार्य ने अन्य भारतीयों के साथ देशभक्ति के साथ भारत माता को स्वतंत्र कराने की शपथ ली। जब तक देश को स्वतंत्र नहीं करा लिया जाएगा तब तक वे अमन चैन से नहीं रहेंगे। सभी ने मिलकर इस अवसर पर एक बड़ा ही देशभक्ति का लेख प्रस्तुत किया जिसमें इस अभूतपूर्व घटना के वर्णन के साथ–साथ उनके इरादों की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई। उन्होंने कुछ निर्णय भी लिए।88 इस बड़े लेख में उन्होंने दर्शाया : ''आज 10 मई का दिन है। यह वह दिन है जब 1857 में एक बड़ी ही यादगार घटना घटी जो तुम्हारे द्वारा किया गया स्वतंत्रता का प्रथम प्रयास था। ओह ! बहादुर वीरो ! तुमने यह (युद्ध) भारत के रण–क्षेत्र में लड़ा। भारत माँ को जगाया और यहाँ तक जगाया कि वह दासता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए एकदम उत्सुक हो गई। उसकी तलवार म्यान से बाहर आ गई, बंधन तोड़ दिये और अपनी प्रतिष्ठा और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए (विदेशियों पर) प्रहार किया।''89

सावरकर के द्वारा लिया गया यह चार पृष्ठों का लेख वास्तव में आँख खोलने वाला था जिसमें उन्होंने ज्यादातर ध्यान 1857 की क्रांति पर ही रखा। मेरठ के वीर सैनिकों को याद करते हुए उन्होंने आगे लिखा : ''इसी दिन मेरठ के सिपाहियों ने एक भयावह क्रांति का रूप दिया और फिर दिल्ली की ओर बढ़े... हम उस भयावह मिशन को यथावत जारी रखने के लिए दृढ़–संकल्प के साथ कहते हैं कि विदेशियों को भगाओ.....1857 के युद्ध के लिए हम तब तक रुकने का नाम नहीं लेंगे जब तक क्रांति नहीं हो जाती है। दासता को परस्त कर दो, गद्दी प्राप्ति के लिए स्वतंत्रता का युद्ध जारी रहना चाहिए। एक व्यक्ति जब अपनी स्वतंत्रता के लिए तैयार होता है जब स्वतंत्रता रूपी अंकुर बलिदानों के रक्त के

रूप में उगता है और जब तक एक सच्चा सपूत अपने पिता के खून का बदला नहीं लेता है तब तक यह संघर्ष समाप्त नहीं होगा।''90

क्रांति की विस्तार से व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा कि विश्व की जितनी भी क्रांतियाँ हुई उनमें अगर नेतृत्व ठीक ढ़ंग से किया गया तो वह अवश्य सफल हुई। उनका मानना था कि भारत में फिर उसी तरह की क्रांति की सख्त आवश्यकता थी। उन्होंने आगे लिखाः ''एक क्रांतिकारी युद्ध हमेशा या तो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद या मृत्यु के साथ समाप्त होगा है। हमें इस घटना ने प्रेरित किया; 1857 में चलाए गए इस युद्ध को आगे तक ले जाने की शपथ हम सभी लेते हैं। हम अस्त्र–शस्त्रों के प्रयोग को स्वीकार नहीं करते हैं; हम तुम्हारे द्वारा किये गए इस युद्ध को प्रथम (स्वतंत्रता) संग्राम के रूप में देखते हैं।''91

उस सभा ने उपस्थित भारतीय क्रांतिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा, एस. आर. राणा, आचार्य, मैडम कामा आदि ने लाला लाजपतराय और सरदार अतीत सिंह को गिरफ्तार करके देश निकाले की सजा की कड़े शब्दों में आलोचना की। उनका मानना था कि उनके इस बलिदान के उदाहरण से देशभक्ति की भावना भारतीयों में बढ़ेगी और वे इसका अनुसरण भी करेंगे। मैडम कामा ने अपने भाषण में कहा कि राष्ट्र के नायकों के बलिदानों के खून से सींचा गया राष्ट्र रूपी अंकुर जब उगेगा तो वह स्वतः ही स्वतंत्रता प्राप्त कर लेगा। उन्होंने देशवासियों से अपील करते हुए कहा कि उन्हें दो देशभक्त नेताओं को अंग्रेजों के चंगुल से जल्द से जल्द मुक्त कराना होगा।92

भारत के सभी पुरुषों और स्त्रियों के नाम उन्होंने अपने संदेश में स्पष्ट रूप से कहा कि ''जितना जल्दी हो सके, दोनों ही भारतीयों को अंग्रेजों की आक्रामकता से छुटकारा दिलाया जाए और ब्रिटिश शासन को भारत से एकदम समाप्त किया जाए। उन्होंने अन्य क्रांतिकारियों से अपील करते हुए कहा कि भारत प्रशिया, अरबिया के भूतकाल के बारे में बात करने के कोई मायने नहीं हैं।''93 आगे उन्होंने कहा : ''अगर आप आज दासता में जकड़े हुए हो? बहादुर राजपूत, सिक्ख, पठान, गोरखा, देशभक्त मराठों और बंगाली, चुस्त पारसी और साहसी मुसलमान और उदारवादी जैन, धैर्यशाली हिन्दू–शक्तिशाली जातियों के महान बच्चों आप अपने रीति–रिवाजों के अनुसार क्यों नहीं रहते? दासता में जीने के लिए क्यों आपको विवश किया जाता है? बाहर आओ स्वराज्य के अंतर्गत स्वतंत्रता और समानता स्थापित करो। अपने आपके लिए और अपने बच्चों के लिए यह सब करो।''94

भारतीय क्रांतिकारियों ने उस सभा के अंत में इस बात पर जोर दिया कि भारतीय युवकों को अस्त्र–शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण महत्वपूर्ण था क्योंकि शस्त्र का जवाब शस्त्र ही था। इसी के द्वारा ब्रिटिश शासन को समाप्त किया जा सकता था। प्रथम बार तीन भारतीयों को इस तरह के प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त समझा गया जिनमें आचार्य, वी0 वी0 एस0 अय्यर, मदन लाल धींगड़ा प्रमुख थे। उन्हें चलाने का प्रशिक्षण दिया गया। वे बहुत ही जल्दी अच्छे निशाने लगाने वाले माने गए। दो ही तथ्यों पर

ज्यादा जोर दिया गया। प्रथम क्रांतिकारी साहित्य का प्रकाशन करना और भारत में अस्त्र–शस्त्र व प्रशिक्षित भारतीयों को एक साथ भेजे जाने का था। भारतीयों को संगठित करने की क्रिया–कलापों का मुख्य रूप से सहारा लिया गया।95 उनका मुख्य उद्देश्य था कि नवयुवकों में आत्म–बलिदान की भावना जगाना। गणेश सावरकर जो विनायक दामोदर का भाई था ने दो पुस्तकें देशभक्ति के गीतों की प्रकाशन के लिए तैयार की ताकि उनका वितरण मित्र–मेलों में किया जा सके।96

विनायक दामोदर सावरकर के छोटे भाई गणेश सावरकर की दोनों ही पुस्तकों को जब्त कर लिया गया और 9 जून, 1909 को गिरफ्तार करके आजीवन कारावास की कड़ी सजा दी गई। जब इस घटना की जानकारी भारतीय क्रांतिकारियों को लंदन में मिली तो उनके दिलों में अंग्रेज–विरोधी भावना का भड़कना स्वाभाविक था। 1907 के बाद विनायक दामोदर सावरकर लंदन में क्रांतिकारी गतिविधियों का महत्वपूर्ण नेता था। उसने अपने जोशिले भाषण में कहा कि अब समय आ गया जब अंग्रेजों का व्यापक स्तर पर कत्लेआम कर दिया जाए ताकि उनके दिल में डर बैठ सके।97

उपस्थित भारतीयों का आह्वान करते हुए जोर देकर आगे कहा कि देश की सेवा के लिए उनका यह दायित्व था कि जितना भी जल्दी हो सके अपने आपको देश के लिए न्योछावर कर दो। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि यही सबसे बड़ी देश सेवा थी उनके द्वारा दिया गया ओजस्वी भाषण का यह परिणाम निकला कि मदनलाल धींगड़ा अपनी इंजीनियरिंग की शिक्षा समाप्त कर चुका था और वापिस पंजाब को आने वाला था, उसके भाषण से बहुत ही प्रभावित हुआ। उसने शपथ ली कि वह जल्दी ही अंग्रेजों को अपना निशाना बनाकर भारत माता को जंजीरों की बेड़ियों से मुक्त कराने में पीछे नहीं रहेगा। उसके दिल में देशभक्ति की भावना इतनी उमड़ी कि वह रातभर भर जागता रहा और अंततः उसने बड़ी घटना को अंजाम दिया।98

लंदन में हुई 20 जून 1909 को इंडिया हाउस की सभा में सावरकर के उस शानदार और ओजस्वी भाषण के द्वारा जो संदेश दिया था उसका यह परिणाम निकला कि सर कर्जन वायली जो कि भारत मंत्री मोर्ले का ऐ0 डी0सी0 था को मदनलाला धींगड़ा ने निशाना बनाया। जब इम्पीरियल इंस्टीच्यूट में 1 जुलाई को एक सभा का आयोजन किया गया था तब उसको मार दिया गया। भारतीय क्रांतिकारियों की आंखों में लार्ड कर्जन वायली तिनके की तरह खटकता था और वे उसके एकदम खिलाफ थे क्योंकि उनको ही क्रांतिकारी गतिविधियों को समाप्त करने के लिए भारत में जिम्मेदार माना गया था। दूसरा कारण यह था कि कर्जन वायली को ही लंदन में भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रतिबंधित करने के लिए जिम्मेदार माना गया।99

एक अन्य पारसी डॉक्टर कोवासजी लालकाका भी उसी दौर में मारा गया क्योंकि वह भी वायली के पास ही खड़ा हुआ था। हालांकि उसे बचाने की कोशिश की गई अस्पताल ले जाते समय कुछ ही देर में उसने दम तोड़ दिया। इस घटना से लंदन में खलबली मच गई। भारतमंत्री जॉन मार्ले

पर दबाव बनाया गया और आगाह किया कि इस तरह की घटना की पुनार्वति न हो जिससे ऐसी गतिविधियाँ यूरोप के अन्य भागों में न फैल जाए। वह सही मायनों में इसको समझ नहीं पाया। उसके दिल में अनेक प्रश्न उठ रहे थे कि क्या यह घटना व्यक्तिगत कार्य का परिणाम थी या 'भारतीय षड़यंत्रकारियों' द्वारा राजनीतिक उद्देश्य से की गई हत्या थी।100

आचार्य उस समय मौजूद था, वह भी कुछ भयभीत सा दिखाई दिया। हालाँकि जब भी इण्डिया हाउस में वह आता था तो उसका मन हमेशा उदास सा रहता था लेकिन कर्जन वायली की हत्या के बाद तो उसके चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई दे रही थी। उस दिन अन्य उपस्थित लोगों से उसने ज्यादा बात नहीं की। उस समय उसके मन में किस तरह की भावना हिलोरे ले रही थी कोई भी उपस्थित भारतीय उसके चेहरे के हाव–भाव को समझ नहीं पाया, यह उसकी परिपक्वता की निशानी थी।101

आचार्य और दूसरे सभी भारतीय क्रांतिकारियों से इसके बारे में पूछताछ की गई। लेकिन यह नहीं कह सके कि सभी भारतीय लंदन छोड़कर चले जाएँ। कलकत्ता के रहने वाले सैयद हैदर के द्वारा आचार्य को कहलवाया गया कि उसे लंदन छोड़कर अमेरिका चले जाना चाहिए।102 इस बात की पुष्टि स्वयं उन्होंने अपने एक लेख में स्पष्ट रूप से की थी कि ''एक दिन सैय्यद हैदर रजा ने बातों–बातों में उसे सलाह दी कि वह अमेरिका चला जाए जहाँ वह अपना अध्ययन और आत्मनिर्भरता के साथ वह वहाँ रह सके। यहाँ की दुःखभरी और पराधीन जिन्दगी से मुक्ति भी पा सकता था।''103

स्थिति की नजाकत को देखते हुए कई क्रांतिकारी ब्रिटिश पुलिस के रवैये को देखकर अन्य देशों में चले गये। सम्भवतः उनको इस बात का आभास था कि कहीं पुलिस उन पर शक करके वायली हत्या–काण्ड में न फँसा दे।104 ब्रिटिश गुप्तचर विभाग को सख्त हिदायत दी गई कि भविष्य में ऐसी गतिविधियों की पुनरावर्ती नहीं हो सभी जानकारी प्राप्त होती रहे।105 उन्होंने इस घटना को यहाँ पर यह भी बताना अति महत्वपूर्ण समझा कि कुछ भारतीय जो इंग्लैण्ड परस्त थे कायरतापूर्ण करार दिया। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी सहानुभूति इंग्लैण्ड के पक्ष में प्रस्तुत करने के लिए एक सभा करने का भी निर्णय लिया गया।106 लंदन में 7 जुलाई 1909 को आगा खान, मांचेरजी भावनागरी जैसे भारतीयों ने आयोजन का निर्णय लिया था। घटना के विरोध में व्यापक स्तर पर भर्त्सना की गई और सफाई के पक्ष में सर थियोडार मारीसन जो उस समय लंदन में था मदनलाल धींगड़ा के छोटे भाई बिहारीलाल धींगड़ा को उस सभा में मंच पर लाया गया और उससे कहलवाया गया कि उसके भाई द्वारा किये गए हथ्या–काण्ड पर उसने अफसोस प्रकट किया।107 बिहारी लाल धींगड़ा ने आगे कहा : ''यह भाग्य की विडम्बना ही है कि हमारा परिवार सरकार के प्रति वफादार होते हुए ब्रिटिश लोगों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए होने के कारण एक युवक ने कुल की मर्यादा को छोड़कर हत्यारे का रूप ले लिया।108 सरकार यहाँ पर ही नहीं रूकी बल्कि मदनलाल धींगड़ा के पिता ने भी पंजाब में तार के द्वारा सम्पर्क स्थापित कर संदेश प्राप्त किया। तार में लिखवाया गया कि वह उसका लड़का नहीं था जिसने ऐसी

घिनोनी कार्यवाही करके कुल को बदनाम किया। सरकार ने सभी तरह के हथकण्डे अपनाए ताकि यह प्रमाणित किया जा सके कि यह कुछ सिरफिरे भारतीयों के तुच्छ कारनामे मात्र थे।109

लन्दन में इस तरह के आयोजन कर अपमान करना ठीक नहीं था। यहाँ पर यह बताना आवश्यक होगा कि सावरकर और आचार्य ने उस सभा में जाने का निर्णय लिया और एक प्रस्ताव तैयार किया गया। उन्हें पता था कि मीटिंग में सभी उपस्थिति लोगों द्वारा धींगड़ा के विरूद्ध प्रस्ताव पास किया जाएगा।उस सभा में अनेक क्रांतिकार भारतीय अलग–2 स्थानों पर बिखर कर बैठ गए ताकि सभी कोणों से प्रस्ताव का जमकर विरोध किया जा सके। अनेक भाषण कर्ताओं ने बड़े–2 भाषण दिए लेकिन सभी ने बड़े धैर्य के साथ सुना। भाषणों के बाद एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। उपस्थित श्रोताओं की राय लेने के लिए मीटिंग के अध्यक्ष आगा खाँ ने खड़े होकर प्रस्ताव पढ़ा कहा कि यह प्रस्ताव सर्व–सम्मति से पास होने का उन्हें पक्का विश्वास था।110

सभा में चारों तरफ शांति और मायूसी भी थी सभासदों का ऐसा विश्वास था कि कोई भी प्रस्ताव का विरोध नहीं करेगा। जब सभी की राय ली गई तो उपस्थित जनसमूह ने 'हाँ–हाँ' कहकर प्रस्ताव के पास करने के पक्ष में अपनी सहमति जताई। सभा के मांचेरजी भवनागरी जी अध्यक्ष थे। उन्हों पूछा कि प्रस्ताव के विरोध में कोई भी नहीं है अतः प्रस्ताव पारित मान लिया जाता है। विनायक दामोदर एकदम खड़े हुए और कहा कि ''प्रस्ताव सर्वसम्मति से नहीं माना जाए, मैं इसका विरोधी हूँ।'' विनायक के बाद तो और भी कई आवाजें सुनी गई जिनमें प्रस्ताव का विरोध किया गया था।111 दामोदर का यह साहस भरा कार्य था लेकिन ब्रिटिश प्रेस ने इसकी भर्त्सना की।112

हाथ में बैंत लिए हुए आचार्य उस समय सावर के पास खड़ा था। उसने बैंत लगा कर सावरकर के कान में धीरे से कहा कि ''क्या इसे गोली से मार दूँ?'' लेकिन सावरकर ने आचार्य को एसा करने से एकदम रोक दिया।113

आचार्य को पामर पर काफी गुस्सा आया था और वह इस प्रकार एक तरह से मरता हुआ बचा। आचार्य का उस समय साहस और उसकी देशभक्ति वास्तव में अनुकरणीय थी और अपने नेता के प्रति उसने एक सच्चे वफादार का प्रमाण प्रस्तुत किया।113 इससे प्रतीत होता है कि वह ऐसी स्थिति में भी अपने देश के लिए मरने के लिए किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं दिखाई।114 सभा में उपस्थित पुलिस इस तरह के व्यवहार से एकदम सकते में आ गई। पुलिस ने दोनों सावरकर और आचार्य को गिरफ्तार कर लिया लेकिन दोनों ने ही पुलिस वालों ने कई सवाल पूछे। उनसे पते पूछ कर अन्ततः छोड़ दिया गया। ब्रिटिश पुलिस के ऐसे व्यवहार से उन्हें काफी आश्चर्य हुआ। जो मारपीट सावरकर और पामर के बीच हुई थी। वह मामला कोर्ट में असैनिक मामले के रूप में दर्ज कर मुकदमा चलाने के आदेश दिये गये।115

सावरकर को कानूनी ज्ञान होने के कारण वह भलिभांति जानता था कि उनके विरूद्ध दर्ज मुकदमें को कैसे रोका जाना चाहिए। सावरकर काफी सोच–विचार कर वह इस नतीजे पर पहुँचा कि क्यों न उसके विरूद्ध मुकद्दमा दर्ज कराया जाए। उसने ऐसी जनसभा में उसकी बेईज्जती की और उसकी एक आँख तो फूटते–फूटते बड़ी ही मुश्किल से बच पाई।116

इसमें कोई संदेह नहीं कि वीर सावरकर ने बड़ी ही सूझबूझ से काम लिया और पामर को कोर्ट जाने से रोक दिया गया। उनकी इस सूझबूझ से दोनों के विरूद्ध केस दर्ज होने से बच गए। यह वास्तव में उनकी बड़ी विजय थी।117

इंग्लैंड में विपक्ष के दबाव के कारण भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड मिन्टो को मार्ले ने सूचित किया कि भारत में भी इस केस की जड़ों के बारे में गहराई से जाँच कराई जाए ताकि हत्यारे का वास्तव में क्या ध्येय था का पता लग सके। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस घटना और मीटिंग के बाद यह अवश्य साफ हो गया था कि ब्रिटिश पुलिस अब भारतीय क्रांतिकारियों की जानकारी रखने के साथ–2 उनकी गतिविधियों पर भी निगरानी रखेगी।118

अब पुलिस उनकी हर तरह की गतिविधियों की जानकारी इक्कठा करने में जुटी। इंडिया हाउस की गतिविधियों में भी ठहराव सा आने लगा और भविष्य में कोई भी कार्य करना आसान नहीं लग रहा था।119 आचार्य बड़े असमंजस में था कि अब क्या किया जाए क्योंकि सरकार एकदम विरोध में खड़ी हो चुकी थी। ऐसी जगह पर जाना चाहिये जहाँ पर वह कम खर्च से अपनी राष्ट्रवादी कार्यवाहियाँ जारी रख सके। ब्रिटेन में अब नाममात्र की ही स्वतंत्रता थी। जिस तरह भारत में सरकार आक्रामकता दिखाती थी वैसी ही अब लंदन में दिखाने लगी।120

ऐसी स्थिति में क्या किया जाना चाहिए अनेक प्रश्न सामने आ रहे थे। वह अजीब सी स्थिति में था। कभी–कभी भारत वापिस जाने का उसका मन करने लगा तो कभी यूरोप के अन्य देशों में जाकर कुछ किया जाना चाहिए। उसका मानना था कि भारत सरकार उसे अवश्य किसी न किसी केस में फँसाकर जेल में डाल देगी जिन्दगी भर तक के लिए। वह फिर सोचने लगा कि भारत को छोड़ने का उसका कुछ न कुछ ध्येय तो अवश्य था जिसे पूरा करने के लिए देश छोड़ा था लेकिन पाश्चात्य देशों की स्थिति दिनोंदिन बदल रही थी। वह निर्णय नहीं ले पा रहा था कि अब क्या किया जाए।121वह कई दिनों तक गुप्त रूप से इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करता रहा। जो भावना यहाँ पर लेकर आया था वह अब जवाब दे रही थी, बेबसी के शिकार सा अनुभव कर रहा था।122

संदर्भ :

1. सेठना, खोर्शेद आदि, *मैडम भिखईजी रूसतम कामा,* (दिल्ली 1987) पृ. 49
2. *मिनैट्स ऑफ ब्रिटिश कांग्रेस कमेटी,* ख, जून 20, 1889–अक्तूबर, 2, 1890

3. *मिनैट्स ऑफ ब्रिटिश कांग्रेस कमेटी*, ख, जून 20, 1889–अक्तूबर, 2, 1890
4. *उपर्युक्त।*
5. काटन, एच. जे. एस; *न्यू इंण्डिया और इण्डिया इन ट्रांजिसन* (लंदन, 1907) पृ. 20–25
6. *इण्डिया*, अगस्त, 1892
7. *उपर्युक्त।*
8. *इण्डियन सोशियोलाजिस्ट*, जून, 1905
9. *इण्डियन सोशियोलाजिस्ट*, जून, 1905
10. *उपर्युक्त।*
11. *उपुर्यक्त*, मार्च, 1905
12. *उपर्युक्त।*
13. *उपर्युक्त*, जून, 1905
14. *उपर्युक्त।*
15. *उपर्युक्त।*
16. दत्ता–गुप्ता, सोभनलाल, *वही*, पृ. 11–15
17. *इण्डियन सोशियोलाजिस्ट*, जून, 1905
18. *उपर्युक्त।*
19. *उपर्युक्त।*
20. *उपर्युक्त।*
21. याजनिक, इन्दुलाल, *श्यामजी कृष्णवर्मा* (बम्बई, 1950), पृ. 141
22. *उपर्युक्त।*
23. सरदारसिंह जी रेवाभाई राणा एवं वैडरबर्न के बीच पत्र–व्यवहार, पेरिस, जनवरी 24, 1906; *गोखले संग्रह* (राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली)।
24. ह्यूम द्वारा वैडरबर्न को लिखा गया एक पत्र, लंदन, जनवरी 3, 1906; *उपर्युक्त।*
25. *उपर्युक्त।*
26. बालगंगाधर तिलक का फिरोजशाह मेहता को लिखा गया एक पत्र, बिना तारीख, *तिलक संग्रह,* (न.मै.म.ला.)
27. *उपर्युक्त।*
28. बालगंगाधर तिलक का फिरोजशाह मेहता को लिखा गया एक पत्र, बिना तारीख, *तिलक संग्रह,* (न.मै.म.ला.)

29. *केसरी* (पूना) फरवरी 14, 1905 नामक पत्र को तिलक ने प्रारंभ किया था जो राष्ट्रवादी विचारों का कड़ा समर्थक था।

30. उपर्युक्त।

31. कर, जेम्स कैम्पबैल, *वही*, पृ. 106–29

32. वर्मा, डॉ0 गणेषीलाल, *श्यामजी कृष्णवर्मा, दा अननान पैट्रियट*, (दिल्ली 1993)

33. *केसरी*, फरवरी 16, 1905

34. *इण्डियन पार्लियामैंटरी डिबेट्स* (हाउस ऑफ कामन्ज), खण्ड 152, पृ. 837–38

35. याजनिक, इन्दूलाल, *श्यामजी कृष्णवर्मा : लाईफ एण्ड टाईम्स ऑफ ऐन इंडियन रिव्योलूसनरीज*, पृ. 142–43

36. उपर्युक्त।

37. बैनर्जी, सुरेन्द्रनाथ, *ऐ नेशन इन मेकिंग* (कलकत्ता, 1926), पृ. 71–80

38. सेठना, *वही*, पृ. 99,133

39. *तलवार* (बर्लिन) खण्ड प्प्, नं0 1, सितम्बर 1911

40. उपर्युक्त।

41. सेठना, *वही*, पृ. 52

42. *तलवार* (बर्लिन) खण्ड प्प्, नं0 1, सितम्बर 1911

43. नारौजी, दादाभाई।

44. उपर्युक्त।

45. सेठना, *वही*, पृ. 92–95

46. उपर्युक्त।

47. *रिपोर्ट ऑफ दा प्रोसिडिंग ऑफ टवैंटी सैकण्ड इण्डियन नैशनल कांग्रेस, कलकत्ता सेशन*, 1906, पृ. 7

48. उपर्युक्त।

49. बैनर्जी, *वही*, पृ.

50. *इण्डियन सोशियोलोजिस्ट*, दिसम्बर, 1907

51. उपर्युक्त।

52. वर्मा, *वही*, पृ.

53. सेठना, *वही*, पृ. 101–102

54. *इण्डियन सोशियोलोजिस्ट*, अक्तूबर, 1907

55. उपर्युक्त।

56. वर्मा, *वही*, पृ. 52–56

57. सेठना, *वही*, पृ. 63

58. उपर्युक्त, पृ. 59

59. सरीन, तिलकराज, *इण्डियन रिव्योलूशनरी मूवमैंट अबरोड* (दिल्ली 1979), पृ. 10–11

60. सरीन, *उपर्युक्त,* पृ. 10–11

61. श्रीवास्तव, हरिन्द्र, *फाईव स्ट्रोर्मी इयर्स, सावरकर इन लन्दन,* पृ. 87–90

62. *इण्डियन रिव्यू,* मई 1973, पृ. 29

63. *मराठा,* जुलाई 30, 1937

64. *मराठा,* अगस्त 27, 1937

65. उपर्युक्त।

66. सेठना, *वही*, पृ. 59–61

67. श्रीवास्तव, *वही*, पृ. 88–91

68. सेठना, *वही*, पृ. 59–60

69. वर्मा, गणेशीलाल, *वही*, पृ. 32–33

70. *उपर्युक्त।*

71. आचार्य, *वही*, पृ. 84–86

72. सेठना, *वही*, पृ. 59

73. *होम (डिपार्टमैंट) पालिटिकल*, डी0 दिसम्बर, 1908, सं0 19

74. *उपर्युक्त।*

75 *उपर्युक्त*, जून 1909, सं0 30

76 *मराठा*, अगस्त 27, 1937

77 *उपर्युक्त।*

78 आचार्य, *वही,* पृ. 87–88

79 *दी इंडियन रिव्यू,* मई 1974, पृ. 29

80 *उपर्युक्त।*

81 आचार्य, *वही,* पृ. 86–88

82 *दी इंडियन रिव्यू,* पृ. 29–30

83 *उपुर्यक्त।*

84 सेठना, *वही,* पृ. 59

85 उपर्युक्त

86 *इंडियन सोशियोलोजिस्ट*, जुलाई, 1908

87 *मराठा*, मई 11, 1927

88 सेठना, *वही*, पृ. 59–60

89 *इंडियन सोशियोलोजिस्ट*, जून 1907

90 *उपुर्यक्त।*

91 *इंडियन सोशियोलोजिस्ट*, जून 1907

92 *उपुर्यक्त।*

93 *उपुर्यक्त।*

94 कर, जेम्स, कैम्पबैल, *वही*, पृ. 178

95 *उपुर्यक्त।*

96 *उपुर्यक्त*, पृ. 179

97 *उपुर्यकत।*

98 *उपुर्यक्त।*

99 सरकार की गुप्त रिपोर्ट में उस पर अनेक तरह के इल्जाम लगाये गए जिनके कारण वायली को मारना आवश्यक समझा गया। *होम (डिपार्टमैंट) पालिटिकल, ए.* सितम्बर 1909, नं0 66–67

*100*आचार्य, *वही*, पृ. 91–92

101 *मराठा*, सितम्बर 3, 1937

*102*आचार्य, *वही*, पृ. 92

103 *उपर्युक्त।*

104 *उपर्युक्त।*

105 *मराठा*, सितम्बर 3, 1937

*106*आचार्य, *वही*, पृ. 92

107 *उपर्युक्त*, पृ. 93

108 *उपर्युक्त*।

*109*मार्टिन गिल्बर्ट, *सर्वेन्ट ऑफ इण्डिया* (लंदन 1966), पृ. 193

*110*आचार्य, *वही*, पृ. 94

111 *मराठा*, सितंबर 3, 1937

112 *टाईम्स* समाचार–पत्र ने इस पर काफी बड़ा सम्पादकीय नोट लिखा जिसमें क्रांतिकारी गतिविधियों की भर्त्सना की गई थी। सरकार को आगाह किया कि इस पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही करके क्रांतिकारी आन्दोलन को ध्वस्त किया जाए।

*113*आचार्य, *वही*, पृ. 94

114 इंडियन रिव्यू, मई 1974, पृ. 31

115 मराठा, सितंबर 3, 1937

*116*आचार्य, *वही*, पृ. 94

117 उपर्युक्त।

118 होम (डिपार्टमैंट), पालिटिकल ए, जनवरी 1911, सं0 52–54

119 उपर्युक्त।

120 होम (डिपार्टमैंट) पालिटिकल ए, जनवरी 1911, सं0 52–64

*121*आचार्य, *वही*, पृ. 98

122 *मराठा*, सितंबर 10, 1937